Notification.no. 518/2022 **Date:02-08-2022**

Research Scholar : Saira Bano-

Supervisor : Prof. Neeraj Kumar

Department : Hindi

Title : Samkaleen Hindi Katha Sahitya Mein Chitrit Aadiwasi Jeewan Ka Adhyayan (1990-2015)

Keywords: आदिवासी, भूमंडलीकरण, अदस्मता, दवस्थापन, शोषण

संक्षिप्त शोध सार

भारतीय आदिवासी समाज जनसंख्या की दृष्टि से विश्व में अफ्रीका के बाद दूसरे स्थान पर है। भारत के बहुसांस्कृतिक वैभव हेतु आदिवासी संस्कृति व इनकी विशिष्ट जीवन शैली अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस समाज के अपने रीति-रिवाज व नियम है जिनमें यह बाह्य हस्तक्षेप नहीं चाहते हैं। यह समाज जिस प्रकार केवल एक निश्चित स्थान अथवा निश्चित प्रतिमा का पूजक न होकर सम्पूर्ण प्रकृति का उपासक है उसी तरह यह उन्मुक्त जीवन जीने का भी आदी है। गैर- आदिवासी समाज की तरह यहाँ स्त्री दोयम दर्जे पर नहीं हैं और न ही किसी प्रकार का रंग अथवा जाति भेद है। सम्पूर्ण प्रकृति पर प्रत्येक व्यक्ति का अधिकार है इसलिए न तो यहाँ भूमि का बंटवारा है और न ही जंगलों, नदियों आदि पर किसी भी तरह का निजी अधिकार है। वास्तविक आदिवासी जीवन यही है जिसमें 'जियो और जीने दो' की भावना व्याप्त है। गैर- आदिवासी समाज हेतु आदिवासी समाज केवल नफे नुकसान का मामला है। आदिवासी रहवास में व्याप्त खनिज व अन्य प्राकृतिक सम्पदा गैर- आदिवासी समाज के आकर्षण का मुख्य कारण है। विशाल आदिवासी जनसंख्या का फायदा कई तरह से उठाया जाता है। कहीं अल्पसंख्यक समुदायों द्वारा इन पर जबरन अपना धर्म, जाति थोपी जाती है तो कहीं वोट के लिए इन्हें सब्जबाग दिखाए जाते हैं। आदिवासी समाज वर्तमान में खनिज संपदा के अवैध खनन के कारण विस्थापन, गैर- आदिवासी समाज के हस्तक्षेप के कारण सामाजिक असुरक्षा खासतौर पर स्त्रियों का शोषण, जबरन धर्म परिवर्तन, भूमंडलीकरण के कारण सांस्कृतिक विघटन और विरोध करने पर नक्सली आरोपों का दंश झेल रहा है। सकारात्मक परिवर्तन यह है कि आदिवासी समाज में अव्यवस्थित शिक्षा पद्धति के बावजूद भी एक लम्बे संघर्ष के बाद आज आदिवासी रचनाकार व नेता उभर कर सामने आ रहें हैं। आदिवासी समाज अपने हक की लड़ाई के लिए जहाँ पहले केवल भाला बरछी ही उठाने में समर्थ था वहीं अब वह कलम उठाने के साथ-साथ तर्क-वितर्क करने में भी सक्षम है।

आदिवासी साहित्य विस्तृत है। आदिवासी व गैर-आदिवासी रचनाकारों ने साहित्य की प्रत्येक विधा के माध्यम से आदिवासियों के संघर्ष, उनके अधिकार व समस्याओं को बखूबी उकेरा है। सरकार द्वारा आदिवासी समाज कल्याण हेतु कई नीतियाँ लागू की जाती हैं परन्तु दुर्भाग्यवश राजनैतिक कुचक्रों के कारण यह नीतियाँ आदिवासियों तक विकृत रूप में पहुँचती हैं इसलिए सरकार को इस तरफ अधिक सचेत होने की आवश्यकता है अन्यथा या तो यह समाज हिंसक बन जाएगा या अस्तित्वहीन हो जाएगा। कई राज्यों में आदिवासी मुख्यमंत्री और भारत के राष्ट्रपति पद पर भी आदिवासी महिला का होना इस समाज की प्रगति का ज्वलंत उदाहरण है।।